वार्तालाप–458, कोयम्बतूर–1 (तमिलनाडु), दिनांक–05.12.07
**Disc.CD-458, Coimbatore-1 (Tamilnadu), dated 05.12.07**

समय – 0.01–2.40
जिज्ञासु – नश्टोमोहा स्मृतिलब्धा का परिभाषा क्या है बाबा?
बाबा– कोई में लागत न जाये, बुद्धि का झुकाव न जाय। जहां मोह लगा हुआ होगा, बार–बार वहीं बुद्धि झुकेगी, मन बुद्धि वहीं जावेगी। तो समझ लो हमारा वहाँ लगाव लगा हुआ है। कोई चीज खाने–पीने के पदार्थो में लगाव हो जाता है, तो बार–बार वो चीज याद आती है। बुद्धि जाती है उधर। उस चीज से मोह नष्ट हुआ क्या? (किसी ने कहा – नहीं) नहीं नष्ट हुआ। ऐसे ही कोई व्यक्ति है। अपनी देह की इन्द्रियों में भी लगाव जाता है। न देह में लगाव जाये न देह के सम्बन्धियों में लगाव जाये, झुकाव जाये बुद्धि का और न देह के पदार्थो में। कोई भी पदार्थो में बुद्धि न जाये, झुके नहीं। बार–बार उन में बुद्धि न जाये। जो भी इन आँखों से देखते है, इन आँखों से जो कुछ भी देखते है इस दुनिया की चीज उसमें कहीं भी लागत नहीं जानी चाहिये।

**Time: 0.01-2.40**
**Student:** Baba, what is the definition of '*nashtomoha smritilabdha*'?
**Baba:** You should not develop attachment for anyone; the intellect should not be inclined towards anyone. Where there is attachment (to a person or thing), again and again the intellect inclines towards it, the mind and intellect goes towards it.
Then, you should understand that we have an attachment there. If you develop attachment for any eatable, you remember that thing again and again. The intellect goes there. Did you overcome the attachment for that thing? (Someone said – No.) You did not overcome it. Similarly, there is a person (to whom you are attached). You develop attachment for your bodily organs too. The intellect should not develop attachment or inclination either for the body or for the bodily relatives or for the things related to the body. The intellect should not be attracted anything, it should not incline towards anything. The intellect should not be attracted towards them again and again. We should not develop attachment for whatever we see through these eyes, whatever things of this world that we see through these eyes.

इन आँखों से जो नहीं देखते है वहां बुद्धि जानी चाहिये। आत्मा को नहीं देखते इन आँखों से। आत्मा के बाप परमपिता परमात्मा शिव को इन आँखों से नहीं देखते। शिव जिस मुकर्रर रथ में प्रवेष करता है वो भी इन आँखों से नहीं देखा जाता। कौनसी आँख से उसको पहचानते है? वो निराकार शिव ज्योतिबिंदु जिस मुकर्रर रथ में प्रवेश करता है वो मुकर्रर रथ भी इन आँखों से दिखाई पड़ता है क्या? दिखाई पड़ता है? (किसी ने कहा – नहीं) ये आँख पहचान ही नहीं सकती। कौनसी आँख पहचानती है? (किसी ने कहा – ज्ञान नेत्र) ज्ञान के तीसरी आँख से वो बेहद के दोनों बाप पहचाने जाते है। तो उनको याद करना है। बिंदु आत्माओं का बाप और मनुष्य सृष्टि का पिता कौन है उस बाप में कैसे वो निराकार बाप प्रवेष करके निरंतर पार्ट बजाय रहा है उसको याद करना है। नई दुनिया को याद करना है। नई दुनिया को इन आँखों से देख रहे है? इन आँखों से नई दुनिया देखने में नहीं आती। हां, ज्ञान के तीसरे नेत्र से बुद्धि में ये बात बैठती है कि नई दुनिया कैसे होगी और कैसे आवेगी। उस नई दुनिया को याद करना है।

The intellect should go towards what we do not see through these eyes. The soul is not seen through these eyes. The Father of the soul, i.e. the Supreme Father, Supreme Soul Shiv is not seen through these eyes. Even the appointed chariot in whom Shiv enters is not seen (recognized) through these eyes. Through which eyes do we recognize Him? Is the appointed



Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

chariot too in whom the incorporeal point of light Shiv enters visible through these eyes? Is he visible? (Someone said – No.) These (physical) eyes cannot recognize him at all. Which eyes recognize him? (Someone said – the eyes of knowledge.) Both of those unlimited fathers are recognized through the third eye of knowledge. So, we should remember him. We have to remember, (the one) who is the Father of the point-like souls and the father of the human world and how that incorporeal Father is playing a continuous part entering that father (of the human world). We have to remember the new world. Are we seeing the new world through these eyes? The new world is not visible through these eyes. Yes, it fits into the intellect through the third eye of knowledge, how the new world will be and how it will be created. We have to remember the new world.

समय – 2.50 –4.08
जिज्ञासु – बाबा भक्ति में गणेश को पहला देवता समझकर याद करते है ना, किसी भी कार्य के लिये पहले रखते है ना, उसका कारण क्या है?
बाबा – गणेश ने पहले–पहले बाप के डायरेक्शन को पहचान लिया। और गणेश कौन है? (किसी ने कहा – ब्रम्हा) पहला ब्रम्हा कौन? (किसी ने कहा – आदि ब्रम्हा) पहला ब्रम्हा तो प्रजापिता है ना। उस निराकार ज्योति बिंदु बाप के डायरेक्शन्स को असली रूप में किसने पहचाना? ब्रह्मा के मुख से तो सुना और सुनाया गया। लेकिन उन्होनें जो सुना और सुनाया अपने मुख से, उसके सही अर्थ को समझा? नहीं समझा। तो फॉलो कैसे करेंगे? तो पहले–पहले फॉलो करने वाला कौन हुआ? (किसी ने कहा– प्रजापिता।) तो वो ही पहले–पहले फॉलो करता है जो समझता है, समझ करके फिर उसको एक्ट में लाये। इसलिए बताया है मुरली में, ''दुनिया की ऐसी कोई बात नहीं जो तेरे उपर लागू न होती हो।''

**Time: 2.50-4.08**
**Student:** Baba, in *bhakti* (devotion), Ganesh is remembered as the first deity, isn't he? He is put first (in worship) for any ceremony, isn't he? What is the reason for it?
**Baba:** Ganesh realized the direction of the Father first of all, and who is Ganesh? (Someone said – Brahma) Who is the first Brahma? (Someone said – the *Aadi* Brahma.) The first Brahma is Prajapita, isn't he? Who realized the directions of that incorporeal point of light Father in a true form? Only listening and narrating was performed through the mouth of Brahma but did he understand the real meaning of whatever he heard and narrated? He didn't understand it, so how will he follow it? So, who was the one to follow first of all? (Someone said- Prajapita.) Thus, only the one, who understands, follows first of all, he brings it in his act after understanding. That is why it is said in the *murli*, "There is no such thing of the world which cannot be applied on you."

समय – 20.15–22.35
जिज्ञासु – बाबा अमृतवेला अच्छा पावरफुल योग करने का विधि क्या है बाबा?
बाबा– अमृतवेला भी तीन प्रकार से है – एक तो हद का अमृतवेला। वो तो रोज सवेरे बारह बजे के बाद होता है, बारह – एक बजे के बाद, स्थूल सूर्य उगने तक, हद का अमृतवेला। दूसरा अमृतवेला ज्ञान सूर्य जब इस संसार में उदय होना होता है प्रत्यक्ष होता है। होगा कि नहीं होगा? सारे संसार में प्रत्यक्ष होगा ना। सब कहेंगे कि, हां ज्ञान सूर्य भगवान आ गया। तो वो बेहद का अमृतवेला है।



Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

**Time: 20.15-22.35**
**Student:** Baba, what is the method of doing good powerful *yog* at *amritvela*?
**Baba:** *Amritvela* is also of three kinds; one is an *amritvela* in a limited sense. That starts every morning after midnight, after twelve O'clock to one O'clock; till the physical sun rises, it is an *amritvela* in a limited sense. Second (kind of) *amritvela* takes place when the Sun of knowledge is about to rise, is revealed in this world. Will he be revealed or not? He will be revealed in the entire world, won't he? Everyone will say: Yes, the Sun of knowledge God has come. So, that is an *amritvela* in an unlimited sense.

और तीसरा अमृतवेला वो है जब आत्मा इस ज्ञान में आती है और बाप को पहचानती हैं। क्या? हमारी आत्मा में, मन–बुद्धि में, बाप की पहचान होने से पहले जो हमने पुरुषार्थ किया वो फाउन्डेशन की वेला है। माना जिस समय हमें ये ज्ञान मिलता है, हमारी बुद्धि में ज्ञान डाला जाता है और ज्ञान जैसे ही मिला कि मैं आत्मा बिन्दु, मेरा बाप ज्योति बिन्दु, उस समय जितना जिसने फाउन्डेशन पक्का कर लिया उसकी फाउन्डेशन मजबूत नींव हो गई। तो बिल्डिंग ऊंची अच्छी चढ़ेगी। क्या? जो आत्मा जिस समय ज्ञान में आई उसी समय जितना उसने तीव्र पुरुषार्थ कर लिया, तो उसका फाउन्डेशन सारा पुरुषार्थी जीवन तीव्र हो जायेगा। फाउन्डेशन के टाइम पे ही अलबेला हो गया, कुछ सुना, कुछ कान से निकाला, कुछ ध्यान दिया, कुछ नहीं दिया, कभी कोर्स लिया कभी नहीं लिया। सात दिन का कोर्स सात महीने में पूरा किया तो उसका सारा पुरुषार्थी जीवन भी ऐसा ही ढ़ीला–ढ़ाला प्राप्ति वाला होगा।

And the third *amritvela* is when a soul enters this path of knowledge and recognizes the Father. What? Whatever *purusharth* (special effort for the soul) we did before our soul, our mind and intellect recognized the Father is the time of foundation. It means that the time when we receive this knowledge, the time when the knowledge is put into our intellect and as soon as we received the knowledge that I, a soul am a point, my Father is a point of light, at that time, whoever made the foundation firm to whatever extent, his foundation becomes strong. So, the building will rise high nicely. What? Ever since a soul entered the path of knowledge, the faster the *purusharth* he made, his foundation, i.e. the entire *purusharthi* life will become fast to that extent. If he becomes careless at the very time of foundation, if he heard partially, let some of it go out through the ears, if he payed attention to some extent and did not pay attention to some extent, if he took course sometimes and sometimes he did not take the course; if he completed the seven days course in seven months, then his similarly entire *purusharthi* life will also be the one with loose attainments.

समय– 28.29–29.20
जिज्ञासु – बाबा विदेशियों की शादियों में अंगूठी पहनाते हैं लेकिन स्वदेशियों में तो मंगलसूत्र पहनाते है इसका क्या मतलब है बाबा?
बाबा–मंगलसूत्र कहां पहना जाता है, अंगूठी कहां पहनी जाती है? (किसी ने कहा–वो तो गले में पहनते हैं, ये तो हाथ में) मंगलसूत्र गले में लटकाया जाता है। क्या? वो गले पड़ जाती है। और उनकी अंगूठी (अंगुली) में डाली जाती है। जब चाहो तब निकाल लो। जो गले पड़ गई वो कभी निकलेगी नहीं। माना वो बार–बार अंगूठी नहीं पहनते हैं और बार–बार दूसरी अंगूठी पहनते है, तीसरी अंगूठी पहनते है, माना डायवोर्स की प्रथा वहां चलती है। और यहां? यहां जो गले पड़ गई सो पड़ गई, ये ही मंगलमय बात है ताकि व्यभिचार न बढ़ने पाए।



Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

**Time: 28.29-29.20**
**Student:** Baba, rings are exchanged in the marriages taking place in the foreign culture , but in the India tradition a *mangalsutra* (necklace) is tied (around the neck of the bride by the bridegroom); what does it mean Baba?
**Baba:** Where is *mangalsutra* worn and where is a ring worn? (Someone said – That is worn in the neck and this is worn in the hand i.e. fingers). *Mangalsutra* is put around the neck. What? It is tied around the neck. And their ring is worn on a finger; whenever they wish they can remove it. The one which is tied around the neck will never come out (He is bound by the relationship). It means that they do not wear the ring again and again (always) ; they wear another ring again and again, the wear the third ring, it means that the practice of divorce is prevalent there. And what about here? Here, whatever is tied around the neck cannot be removed. This alone is an auspicious thing so that adultery does not increase.

समय– 29.30–32.20
जिज्ञासु– उत्तर भारत से दक्षिण भारत को तो विदेशी कहते हैं, वो कैसे?
बाबा– दक्षिण भारत के लोग, दक्षिण भारत को विदेश कहा है। और उत्तर भारत को स्वदेश कहा है। लेकिन दक्षिण भारत में जो भी मनुष्य मात्र है, वो आत्मायें विदेशी है या शरीर विदेशी है? शरीर विदेशी है। इस आत्मा ने पता नहीं 83 जन्म उत्तर भारत में लिये हों तो? आत्मा उत्तर भारत और दक्षिण भारत की होती है क्या? आत्मा तो नहीं होती। जो पाँच तत्व, ये देह है। वो दक्षिण भारत का हो सकता है। वो तो एक जन्म के लिये है कि अनेक जन्मों के लिये है? देह एक जन्म के लिये है। और आत्मा तो अनेक जन्मों से है।

**Time: 29.30-32.20**
**Student:** When compared to the northern India, the southern India is called a foreign land; how is it?
**Baba:** The people of South India… South India has been called the foreign land and North India has been called *swadesh* (own country/native land). But all the human beings who reside in South India, are those souls foreign or are the bodies foreign? The bodies are foreign. Who knows if this soul might have taken 83 births in North India? Does a soul belong to North India and South India? It is not the soul; it is this body (made up of) the five elements which belongs to South India. Is that for one birth or for many births? The body is for one birth and a soul is there for many births.

तो अगर किसी को कहा जाता है ये दक्षिण भारत का विदेशी है तो देहभान में कह रहा है या आत्माभिमान में कह रहा है? (किसी ने कहा – देहभान में) वो कहने वाला खुद ही देहभानी है। अगर आत्माभिमानी हो तो ये थोड़े ही कहा जाये के ये आत्मा दक्षिण भारत की है? क्या ये पक्का है कि कोई आत्मा 84 जन्म दक्षिण भारत में ही लेती है? और दक्षिण भारत तो होता ही नहीं है 84 जन्म में। 84 जन्म में दक्षिण भारत होगा? (किसी ने कहा – नहीं) ये तो समुद्र में डूबा हुआ इलाका होता है सतयुग, त्रेता में। उत्तर भारत होता है। जम्मू द्वीपे रेवा खण्डे। तो हम आत्माओं ने 21 जन्म उत्तर भारत में उस समय लिये है या दक्षिण भारत में लिये है? उत्तर भारत में उस समय 21 जन्म लिये है। वो हिसाब किताब ऐसा बन गया कि आखरी जन्म में आ करके दक्षिण भारत में जन्म लिया। तो कोई एक जन्म लेने से कोई दक्षिण भारत का हो गया? नहीं।

So, if someone is told that he is from South India, i.e. a foreigner, then is he speaking in body consciousness or in soul consciousness? (Someone said – in body consciousness) That speaker himself is body conscious. If he is soul conscious, then, it won't be said that this soul



Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

belongs to the southern India? Is it certain that a soul takes 84 births only in South India. Moreover, southern India does not exist at all in the 84 births. Will the southern India exist for 84 births? (Someone said – No.) That area remains submerged in the sea in the Golden Age and the Silver Age. The northern India exists. *Jambu dweepey reva khandey*. ( …..) So, have we souls taken 21 births in the northern India at that time or in the southern India? At that time, we have taken 21 births in the northern India. The *karmic* accounts became such that they have taken birth in the southern India in their last birth. So, did he become a resident of southern India by taking just one birth there? No.

अगर दक्षिण भारत के ही होते तो उत्तर भारत में जो भगवान के रूप में प्रत्यक्ष होता है, वो दक्षिण भारत में बार–बार क्यों चक्कर लगाता है? तो उत्तर भारत वालों को क्यों नहीं उठाया पहले? दक्षिण भारत वालों को क्यों पहले उठाया? इससे क्या साबित होता है? पूर्व जन्मों में क्या हिसाब किताब है? जरूर जो दक्षिण भारत में बार–बार चक्कर लग रहे है, इससे साबित होता है कि पूर्व जन्मो में ज्यादा संग का रंग दक्षिण भारत वालों ने लिया है। इसलिये बार–बार आना पड़ता है।

If they belonged only to the southern India, then why does the one who is revealed in the north India as God, takes a round of South India repeatedly? So, did He not lift up those belonging to the northern India first? Why did He lift up those belonging to the southern India first? What does it prove? What is the *karmic* account of the previous births? The repeated visits to southern India certainly prove that the residents of southern India have taken the colour of (his) company to a greater extent in their past births. That is why He has to come again and again.

समय– 32.30–33.00
जिज्ञासु– बी.के. में भोग रखते है ना बाबा। उसका अर्थ क्या बाबा, भाई लोग पूछ रहे है।
बाबा– भक्तिमार्ग है। जैसे भक्तिमार्ग में भक्ति चलती है, वैसे यहाँ ज्ञानमार्ग में भी ढ़ेर सारे भक्त है अभी तक। वो भोग किसको लगाते है ? ब्रह्मा को लगाते है या शिव को लगाते है। (सबने कहा – ब्रह्मा को) शिव तो अभोक्ता है।

**Time: 32.20-33.00**
**Student:** Baba, BKs offer *bhog* (to Baba), don't they? Baba, brothers are asking about its meaning.
**Baba:** It is a path of devotion. Just as *bhakti* is performed in the path of devotion, similarly, there are a lot of devotees till now in the path of devotion here (in the Brahmin world). To whom do they offer *bhog*? Do they offer it to Brahma or to Shiv? (Everyone said – to Brahma.) Shiv is indeed *abhokta* (one who does not enjoy the pleasures of the organs).

समय– 50.51–52.30
जिज्ञासु– दुनिया तो आजकल बहुत खराब हो रही है। क्या ये एडवांस पार्टी से बदल सकती है करके पूछ रहे हैं ये भाई?
बाबा – एड़वांस पार्ट से?
जिज्ञासु – एड़वांस से बदल सकते है ये दुनिया?

**Time: 50.51-52.30**
**Student:** Nowadays the world is degrading a lot. This brother is asking whether it can change through the advance party.
**Baba:** Through the advance party?



Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

**Student:** Can we change this world through the advance (party)?

**बाबा – एड़वांस पार्टी जो बीज रूप आत्मायें है, उनेंसे भी दुनिया नहीं बदल सकती। क्योंकि एड़वांस पार्टी की जो बीज रूप आत्मायें है वो प्योरिटी की लंगड़ी है। क्या? सब स्वभाव संस्कार से पुरूष है या स्त्री है? (किसी ने कहा – पुरूष है) सब पुरूष है, सब दुर्योधन दु:शासन है। चाहे स्त्री चोला वाले हो चाहे पुरूष चोला वाले हों। इसलिये ये चेंज नहीं कर सकते। इनको जो ज्ञान के अंधे बने पडे है वहां, कहाँ? बी.के. नॉलेज में जो ज्ञान के अंधे है, कुछ दिखाई नहीं पड़ रहा है। वो जब सोझरे बनेंगे और वो आ करके सहारा बनेंगे तो उनका आधार ले करके फिर कल्याण होगा। ये लंगड़े अंधे के ऊपर सवारी करें। अंधे को रास्ता बतायें। हैं? और अंधे उनका वजन उठायें। तब ये विषय वैतरणी नदी पार होगी।**

**Baba:** The world cannot change even through the seed-form souls of the advance party because the seed-form souls of the advance party are lame in the subject of purity. What? Is everyone (in the advance party) male or female by their nature and *sanskars*? (Someone said – everyone is male.) Everyone is male; everyone is *Duryodhan* and *Dushasan*, whether they are with a female body or with a male body. Therefore, they cannot change (the world). Those who are blind in the subject of knowledge there; where? Those who are blind in knowledge in the BK knowledge; those who are not able to see anything; when they become enlightened, and when they come and become supporters, then benefit will take place with their support. These lame ones should ride on the blind ones. They should show the path to the blind ones. Hum? And the blind ones should carry their burden, only then will they be able to cross the *vishay vaitarni nadi* (river of vices).

……

Note: The words in italics are Hindi words. Some words have been added in the brackets by the translator for better understanding of the translation.



Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info